P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

# अजमेर में जैन धर्म की स्थापना एवं उसके प्रमुख केन्द्र

**सुमन राठौड**
व्याख्याता,
इतिहास विभाग,
राजकीय कन्या महाविद्यालय
खैरवाड़ा

**सारांश**

ऐतिहासिक स्त्रोतों से यह स्पष्ट होता है कि अजमेर में पांचवी शताब्दी पूर्व संभवतः जैन धर्म की स्थापना हो चुकी थी। अशोक और राजा सम्प्रति के शासनकाल में भी राजस्थान में जैन धर्म की काफी उन्नति हुई व अजमेर जैन धर्म का गढ़ रहा है।

**मुख्य शब्द :** अजमेर, जैन धर्म, संस्कृति , स्थापना केन्द्र

**प्रस्तावना**

**स्थापना**

अजमेर, जैन धर्म एवं संस्कृति के दृष्टिकोण से बहुत ही समृद्ध व श्रमण संस्कृति का विशिष्ट क्षेत्र माना जाता रहा है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से वहाँ का पौराणिक इतिहास अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। जैन अनुयायियों के अनुसार यहाँ कोंकण तीर्थ (आदि क्षेत्र) था, जहाँ ईसा से दो शताब्दी पूर्व पुष्कर के समीपस्थ पद्मावती नाम की वैभवशाली जैन नगरी थी। उसके विध्वंस होने के पश्चात अजमेर नगर जैन धर्म का केन्द्र बना था।

जैन धर्म के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के जीवन काल में राजस्थान के कुछ भागों में जैन धर्म के प्रचार–प्रसार का ज्ञान परवर्ती जैन साहित्य से होता है। भीनमाल के 1276 ईस्वी व मुगस्थ्ल (आबुरोड़) के 1369 ईस्वी के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि महावीर स्वामी ने श्रीमालनगर व अर्बुद भूमि पर विहार किया था। भगवान महावीर के राजस्थान विचरण का शाकम्भरी प्रदेश पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा था। इस प्रदेश के नरेना एवं अजमेर जैन धर्म एवं उसकी संस्कृति के प्राचीन केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित रहे थें। [1]

अजमेर जिले के बड़ली नामक गाँव से (ईसा पूर्व 453 वर्ष) पाँचवीं शताब्दी का शिलालेख प्राप्त हुआ है।[2] जो राजकीय संग्रहालय, अजमेर में रखा है। इसके अनुसार पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व अजमेर क्षेत्र में जैन धर्म की स्थापना हो चुकी थी।

प्रारम्भ में भी राजपूताना में जैन धर्म का प्रचार–प्रसार पूर्ण रूप से था। राजा सम्प्रति जो अशोक का वंशज था, उसने जैन धर्म की उन्नति की और आसपास के क्षेत्रों में अनेक जैन मन्दिरों का निर्माण व मूर्तियाँ प्रतिष्ठित करवाई थी। [3]

अजमेर में पाँचवीं शताब्दी का ढाई दिन का झोपड़ा जो पहले एक जैन मन्दिर था सन् 1212 ईस्वी में शहाबुद्दीन गौरी ने इसे मस्जिद में परिवर्तित करवा दिया था। [4]

मोर्योत्तर काल में अजमेर एवम् पुष्कर के बीच एक समृद्धशाली नगर था, जिसकी पहचान हर्षपुर से की जाती थी। जैन परम्परा में हर्षपुर को जैन धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र वर्णित किया गया है। यहाँ तीन सौ जैन मन्दिर थे। जैनों का हर्षपुर भी इसी स्थल से प्रसिद्ध हुआ था।[5] जिसका उल्लेख ग्यारहवीं शताब्दी के अभिलेखों में भी मिलता है।

मथुरा से प्राप्त जैन अवशेषो, मूर्तियों एवम् अभिलेखों से कुषाणों के शासनकाल से प्राचीन सूरसेन प्रदेश में जैन धर्म की लोकप्रियता का पता चलता है। इस काल में जैन धर्म संघ, गण, कुल एवम् शाखाओं में विभक्त होने लगा था। अतः मथुरा के निकट के राजस्थानी क्षेत्रों में जैन धर्म समृद्व होने लगा। श्रवण बेलगोलाके 1050 ईस्वी के शिलालेख के अनुसार समन्त भद्र ने जैन धर्म की विजय पताका पाटलीपुत्र, मालवा एवम् सिन्ध में बजाने के बाद काँची होते हुए कर्नाटक तक गया था। इस समय मालव लोग अजमेर, जयपुर, टोंक के प्रदेश में स्थापित थे। हर्षपुर, माध्यमिका आदि नगर कुषाण काल में जैन धर्म के प्रतिष्ठित केन्द्र थे।[6] आठवीं और नवमीं शताब्दी में राजस्थान में जैन धर्म के प्रसार का श्रेय हरिभद्र सूरि को दिया जाता है।[7] अजमेर में आतेड़ की छतरियों में आठवीं शताब्दी से दिगम्बर जैन धर्म एवम् संस्कृति का शिलालेखों एवम् चरण पादुकाओं के माध्यम से प्रमाणिक एवम् जीवंत इतिहास है।इन शिलालेखों में सबसे प्राचीनतम शिलालेख विक्रम संवत् 817 (760 ईस्वी) रत्नकीर्ति के शिष्य

पंडित हेमराज के स्वर्गारोहण की याद में निर्मित छतरी में स्थापित है।[8] इस छतरी के बाद विभिन्न छतरियों का निर्माण उन्नींसवी शताब्दी तक क्रमशः होता गया। इससे स्पष्ट होता है कि आठवीं शताब्दी तक अजमेर में जैन धर्म धीरे–धीरे विकास करते हुए अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था।

ग्यारहवीं शताब्दी चौहानों के शासन काल में अजमेर में जैन धर्म का प्रचार–प्रसार अधिक हुआ था। प्रसिद्व जैनाचार्य धर्मघोष सूरि, जिनदत्त सूरि चौहानों के समकालीन थे। जिनके प्रति अगाध श्रद्धा के कारण जैनों के अनुयायियों को मन्दिर बनवाने हेतु अनुमति एवम् भूमिदान किया गया था। चौहान शासकों के शासनकाल मे अजमेर में जैन धर्म का खूब प्रचार–प्रसार हुआ। 1956 तक निरन्तर विकास होता गया।

**प्रमुख केन्द्र**

क्षेत्र विशेष को किसी धर्म के केन्द्र के रूप में मानने हेतु विभिन्न साक्ष्यों की आवश्यकता होती है। इसी क्रम में अजमेर तथा इसके अन्तर्गत आने वाले गांवो को जैन धर्म के केन्द्र स्वीकार करने हेतु अनेक साक्ष्य उपलब्ध है जैसे अजमेर शहर व आसपास के गांवों में जैन मन्दिर, जैन धर्मावलम्बियों की बस्तियाँ, जैन शिक्षण संस्थायें, धार्मिक क्रियाकलाप, शास्त्र भण्डार व स्वाध्याय भवन आदि की उपस्थिति। वर्तमान अध्ययन के सन्दर्भ में अजमेर को चार उपखण्डों (अजमेर, ब्यावर, केकड़ी व किशनगढ़) में विभक्त कर जैन धर्म के केन्द्रों को सूचीबद्ध किया जा रहा है।

**अजमेर–उपखण्ड**

| क्र.सं. | नाम | क्र.सं. | नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | अजमेर | 13 | राजगढ़ |
| 2 | देराठू | 14 | माखुपुरा |
| 3 | नसीराबाद | 15 | वीर |
| 4 | मोराझड़ी | 16 | जेठाणा |
| 5 | पुष्कर | 17 | मांगलियावास |
| 6 | रामनेर ढाणी | 18 | भवानीखेड़ा |
| 7 | सराणा | 19 | . बाघसूरी |
| 8 | ऊँटड़ा | 20 | तिहारी |
| 9 | होकरा | 21 | चादंसेन |
| 10 | कड़ेल | 22 | सणोंद |
| 11 | पीसागंन | 23 | भटियांणी |
| 12 | सराधना | 24 | लोहरवाड़ा |

इनमें अजमेर, देराठू, नसीराबाद, मोराझड़ी व पुष्कर जैन धर्म एवम् संस्कृति के प्रमुख केन्द्र रहे है।

**किशनगढ़–उपखण्ड**

| क्र.सं. | नाम | क्र.सं. | नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | किषनगढ़ | 12 | कलानाड़ा |
| 2 | कोटड़ी | 13 | भोगदीप |
| 3 | नरेना छोटा | 14 | सिरोज |
| 4 | रूपनगढ़ | 15 | दादिया |
| 5 | करकेड़ी | 16 | लाम्बा छोटा |
| 6 | कुचील | 17 | डुसूक |
| 7 | मोहनपुरा | 18 | मंडावरिया |
| 8 | बांदर सिंदरी | 19 | झीरोंट |
| 9 | रूप खड़ाच | 20 | पालड़ी |
| 10 | देवपुरी | 21 | मदनगंज शहर |
| 11 | अरांई | | |

इनमें से किशनगढ़, नरेना छोटा, मदनगंज शहर व रूपनगढ़ प्रमुख है।

**केकडी–उपखण्ड**

| क्र.सं. | नाम | क्र.सं. | नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | बंथली | 17 | घूघरी |
| 2 | फतेहगढ़ | 18 | लूसड़िया |
| 3 | शेरगढ़ | 19 | मेवदाकलां |
| 4 | सांकलिया | 20 | बघेरा |
| 5 | चाँपानेरी | 21 | जूनिया |
| 6 | देवलियाँ कलां | 22 | कर्णोड़कला |
| 7 | नांदसी | 23 | खीरियाँ |
| 8 | सरवाड़ | 24 | ढोस |
| 9 | चकवा | 25 | मनोहरपुरा |
| 10 | सांपला | 26 | कालेड़ा (कंवरजी) |
| 11 | बड़गाँव | 27 | पारा |
| 12 | पान्हेड़ा | 28 | पिपलाज |
| 13 | मेहरूकलां | 29 | गुढ़ा छोटा |
| 14 | टांकावास | 30 | देवगांव |
| 15 | घटियाली | 31 | केकड़ीनगर |
| 16 | सावर | | |

केकड़ी उपखण्ड में केकड़ी, सरवाड़, चकवा, सांपला, मेहरूकलां, सावर, बघेरा, खीरियां, आदि क्षेत्र जैन संस्कृति के मुख्य केन्द्र के रूप में उभर कर आये है।

| क्र.सं. | नाम | क्र.सं. | नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | टांटोली | 12 | घोड़वा |
| 2 | बांजरा | 13 | अजगरा |
| 3 | कुरथल | 14 | ब्यावरनगर |
| 4 | गुलगाँव | 15 | बिखरणीयां |
| 5 | सदारा | 16 | तिलोनिया |
| 6 | सदारी | 17 | कवास |
| 7 | कादेड़ा | 18 | कुचील |
| 8 | बिसुन्दणी | 19 | आलणियांवास |
| 9 | कलेड़ा बागला | 20 | उन्दरी |
| 10 | चौसला | 21 | बस्सी |
| 11 | विजयनगर | 22 | रूपनगर |

इनमें से ब्यावर, टांटोली, बिसुन्दणी, विजयनगर व रूपनगर में जैन धर्म एवं संस्कृति का प्रभाव अधिक है।

अजमेर नगर के मन्दिर प्राचीन एवं विशाल है। वर्तमान में यहाँ लगभग 35 जैन मन्दिर निर्मित है। जिनमें से कुछ मन्दिर दसवीं से बाहरवीं शताब्दी व कुछ सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के निर्मित है। यहाँ के प्रत्येक मन्दिर के साथ एक शास्त्र–भण्डार हे। इन शास्त्र भण्डारों में साहित्यिक निधियों का संरक्षण एवं संग्रह किया गया है। चौहान शासक अर्णोराज के शासनकाल (1132ईस्वी) में जिनदत्त सूरि ने समाज में जैन धर्म एवं शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया। यहीं पर इनकी स्मृति में एक दादाबाड़ी

का निर्माण किया गया था।[9] तेरहवीं शताब्दी में अजमेर नगर मूलसंघ के भट्टारकों का मुख्य केन्द्र बन गया था। दिल्ली व नागौर के भट्टारकों द्वारा भी अजमेर नगर की जनता को जैन धर्म की शिक्षा प्रदान की गई थी। बादशाह फिरोजशाह तुगलक को अपनी विद्या से चमत्कृत करने वाले, भट्टारक प्रभाचन्द भी अजमेर गद्दी से सम्बन्धित थे। संवत् 1748 में भट्टारक रत्नकीर्ति द्वितीय ने अजमेर में पुनः नागौर गादी की शाखा के रूप में भट्टारक गद्दी की स्थापना करवायी थी।[10] जैन मतानुसार अजमेर का अढ़ाई दिन का झोपड़ा, एक जैन शिक्षण संस्थान था। मध्यकाल में जैन मन्दिरों में रात्रि शिक्षा का प्रबन्ध भी था। जैनियों द्वारा शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गई। इन सब के अतिरिक्त यहाँ स्वाध्याय भवन, जैन स्थानक, औशधालय एवं अन्य संस्थाऐं भी कार्यरत थी। उपरोक्त सभी साक्ष्यों के अतिरिक्त, आठवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक के उत्कीर्ण लेखों को संजोये, आतेड़ की छतरियाँ भी अजमेर नगर को जैन धर्म का मुख्य केन्द्र होने की पुष्टी करती है।[11]

**देराठु**

देराठु काफी प्राचीन है। अतिशय क्षेत्र के रूप में जाने वाले इस क्षेत्र में चार दिगम्बर जैन मंदिर हैं जन श्रुति के अनुसार शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा घनोंप ग्राम में, डाई नदी के तट से निकली थी। प्रतिमा पर विक्रम संवत् 1289 फाल्गुन बदी 2 तिथि व प्रतिष्ठा का लेख उत्कीर्ण है।[12] यहाँ जैन धर्मावलम्बियों की संख्या भी काफी है।

**नसीराबाद**

वर्तमान में यहाँ छः जैन मन्दिर है। लगभग सौ जैन परिवार यहाँ रह रहे है, जिनमें खण्डेवाल समाज का बाहुल्य रहा है।

**मोराझड़ी**

यहाँ तीन दिगम्बर जैन मंदिर है।श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मोराझड़ी, पुरा–ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।डाई नदी से निकली भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमां खड़गासन मुद्रा में पांच फीट ऊंची व मनोज्ञ है। इस प्रतिमा पर विक्रम संवत् 1239 का लेख उत्कीर्ण है।

**ब्यावर**

जैन धर्मावलम्बियों व उनके धार्मिक कार्यकलापों की दृष्टि से, ब्यावर, जैन धर्म के केन्द्रों में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ पाँच दिगम्बर जैन मन्दिर है। जिनमें से दो शिखरबंद श्रेणी के है। रानीवाल सेठों की धर्मशाला में एक बहुत बड़ा शास्त्र भण्डार है। जिसमें हजारों पाण्डुलिपियों का संग्रह है।[15]

**मदनगंज–किशनगढ़**

आचार्य ज्ञानसागर, धर्मसागर, विद्यासागर एवं कल्पश्रुतसागर की चातुर्मास स्थली, मदनगंज–किशनगढ़ में तीन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हो चुकी है। यहाँ दिगम्बर समाज की तेरहपंथी एवं बीसपंथी दो पंचायते दो–दो सौ परिवारों के साथ है। इतनी ही संख्या में यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदाय के परिवार है। मदनगंज में चार मन्दिर व एक चैत्यालय और किशनगढ़ में पांच मन्दिर व एक दादाबड़ी अवस्थित है।

**केकड़ी**

केकड़ी को अनेक जैन विद्वानों की जन्म स्थली होने का सौभाग्य मिला। जिनमें प्रमुख विद्वज्जन इस प्रकार थेः– धन्नालाल पाटनी, सन्तोष कुमार शास्त्री, लक्ष्मीचन्द सेठी, भंवरलाल कासलीवाल मिलापचन्द कटारिया, दीपचन्द पांडया व अलोकचन्द पाण्डया आदि जिन्होनें इस नगर का नाम रोशन किया। इसी के परिणाम स्वरूप यहाँ खण्डेवाला, अग्रवाल व ओसवाल परिवार सैकड़ों की संख्या में है। केकड़ी के पंडितों की नगरी होने के गौरव से अलंकृत किया गया। यहाँ दिगम्बर सम्प्रदाय द्वारा निर्मित तीन मन्दिर, विद्यालय, औषधालय एवं धर्मशाला है। जो केकड़ी नगर की, जैन धर्म के मुख्य केन्द्र के रूप में पुष्टी करते है।[16]

**सरवाड**

सरवाड़ नगर दो हजार वर्ष पूर्व भी जैन धर्म एवम् संस्कृति का वैभव सम्पन्न क्षेत्र था, जिसने यश सम्पन्न एवं सदियों से जैन भग्नावशेषो को अपने भूगर्भ में छिपायें रखा था। यहाँ खुदाई से प्राप्त 42 मूर्तियाँ, 2000 वर्षो से भी पुरानी है, जिससे इसकी प्राचीनता स्वयं सिद्व होती है। इस पावन अतिशय क्षेत्र को चिरशान्ति का प्रमुख माना जाता है। यहाँ पर अनेक आचार्य एवम् मुनिराजों ने समय–समय पर विहार कर, न केवल तीर्थ वन्दना की है बल्कि अपने पावन चरण रज से इस पुण्यधरा के धार्मिक महत्व को बहुगुणित किया। यहाँ तीन दिगम्बर जैन मन्दिर है और जैन परिवारों की संख्या भी काफी है। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार गुलाम वंशीय शासक इल्तुतमिश ने भी मन्दिर ध्वस्त करने की भावना से यहाँ आक्रमण किया था।तब मधुमक्खियों ने प्रचण्ड रूप से उस पर आक्रमण कर दिया। जिससे वह जैन मन्दिरों में कोई तोड़–फोड़ नहीं कर सका, और उसे भगवान श्री आदिनाथ जी के समक्ष नतमस्तक होना पड़ा था। बादशाह की करबद्व मूर्ति आज भी वहाँ स्थित है। अर्द्ध शताब्दी पूर्व यहाँ आचार्य श्री शान्तिनाथ महाराज का केश लोचन भी हुआ था। सरवाड़ से प्राप्त मूर्तियाँ, बारहवीं से तेरहवीं शताब्दी की कला एवम् संस्कृति की अनुपम निधियाँ है।[17]

**सावर**

अरावली की सुन्दर उपत्यकाओं से घिरा हुआ प्राचीन ग्राम सावर, केकड़ी शहर के दक्षिण में अवस्थित है इसके एक ओर खारी तथा दूसरी ओर बनास नदी है। यह पुरात्तव की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ जैन धर्म एवम् उसके सांस्कृतिक वैभव की कहानी पाषाण खण्ड़ों में उत्कीर्ण है। यहाँ एक चरण पादुका एवं एक जैन शिलालेख संवत् 869 का है।[18] इस शिलालेख से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह ग्राम आठवीं शताब्दी का है और उस समय यहाँ जैन धर्म एवम् संस्कृति का इतिहास गौरवशाली रहा था। यहाँ की सुरम्य पहाड़ी पर स्थित जिनालय तथा वहाँ बिखरे हुए शिलाखण्ड़ों पर चन्द्रप्रभु एवम् बाहुबली भगवान की ऐतिहासिक प्रतिमाओं के साथ–साथ पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक एवम् समवशरण की रचनायें दिग्दर्षित करते हुए शिलाखण्ड है जो जैन धर्म के अतीत के गौरवशाली इतिहास को सिद्व करते है।

**नरेना**

नरेना में उपलब्ध पुरातत्व की सामग्री में अनेक भव्य मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। इन मूर्तियों से पता चलता है कि नरेना नगर ग्यारवीं–बारहवीं शताब्दी में जैन धर्म,

पुरातात्विक, संस्कृति एवं व्यापारिक दृष्टि से बहुत ही समृद्व नगर था। चौहान शासन काल में, नरेना में जैन धर्म की बहुत उन्नति हुई थी।

**बघेरा**

पुरातत्व विभाग द्वारा इस ग्राम में किए गये उत्खनन में अनेक जैन प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है। इनमें अधिकांश प्रतिमाएँ ग्यारहवीं से तेरहवीं में निर्मित है। आकार माप में ये प्रतिमाये आठ ईंच से सात फिट तक विभिन्नता लिए हुए है। इसमें ज्यादातर प्रतिमाएँ पद्मासन व कुछ कायोत्सर्गासन मुद्रा में बनी है।प्रतिमाएँ पाषाण व धातु से निर्मित है। प्रतिमाओं के निर्माण समय, आकार–माप व मुद्रा में विभिन्नता से यहा पुष्टी होती है कि बघेरा प्राचीन काल में जैन धर्म के प्रमुख केन्द्रो में से एक था।

**सन्दर्भ**

1. शाह, त्रिभुवनलाल – ऐन्शियन्ट इण्डिया,(भाग–2)पृष्ठ संख्या, 140.
2. बड़ली, शिलालेख – राजकीय संग्रहालय,अजमेर.
3. शाह, त्रिभुवनलाल –वही, पृष्ठ संख्या, 293–294
4. जैन, कैलाशचन्द –जैनिज्म इन रास्थान, पृष्ठ संख्या, 119.
5. ऐनानेमस – अर्बुदाचल प्रदक्षिणा ,जैन लेख सदोह , अभिलेख संख्या 48.
6. जैन, हिरालाल– जैन शिलालेख संग्रह,(प्रथम भाग)पृष्ठ संख्या 102.
7. सूरि, हरिभद्र– समराइच्चकहा,भूमिका पृष्ठ संख्या, 53, मूल पृष्ठ 87–188.
8. लेख – आतेड़ की छतरी 760 ईस्वी, अजमेर,
9. लेख – जिदत्त सूरि की दादा बाड़ी, अजमेर,
10. पाटनी इन्द्रचन्द– व्यवस्थापक, सिद्धकूट चैत्याल,दौलत बाग चौराह,अजमेर.
11. लेख – आतेड़ की छतरियाँ, अजमेर
12. प्रतिमा लेख – भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमादिगम्बर जैन मन्दिर, देराठू.
13. कासलीवाल, कस्तूरचन्द –जैन समाज का वृहद इतिहास, पृष्ठ संख्या 9.
14. प्रतिमा लेख – श्री पार्श्वनाथ मन्दिर, मोराझड़ी.
15. कासीवाल, कस्तूरचन्द – खण्डेवाल जैन समाज का वृहद इतिहास, पृष्ठ संख्या 9.
16. कासलीवाल, कस्तूरचन्द – जैन समाज का वृहद इतिहास पृष्ठ संख्या 469.
17. ऐनोनिम्स – महावीर दिगम्बर जिनालय तेरहपंथ आयनाय वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव–पत्रिका, पृष्ठ संख्या 6,9.
18. लेख –जैन शिलालेख विक्रम संवत् 869 का,सावर.